पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

# नरेश सक्सेना की कविताओं में बाल-मनोविज्ञान

**सबनम भुजेल**
शोध छात्रा, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक
ईमेल: sabnambhujel123@gmail.com

**शोध सारांश**: समकालीन हिंदी कविता विस्तृत लोक के विकसित भावबोध की कविता है और यह एक ऐसा दौर है जिसने साहित्य की प्रवृत्तियों में नयापन लाया साथ ही ऐसे जीवन को केंद्र में लाने का प्रयास किया जिसने समाज को पूरी तरह झकझोर दिया। इसी साहित्य-धारा ने एक ऐसी प्रवृत्ति को जन्म दिया, जिसने बचपन से ही सारी जिम्मेदारियों का बोझ उठाने के लिए मजबूर बालवर्ग के जीवन को एक नया मोड़ दिया, जिसे आज बाल-मनोविज्ञान या बाल-विमर्श के रूप में भी जाना जाना जाता है। बाल-मनोविज्ञान का संबंध बच्चों की सोच एवं चेतना से है। साहित्य के क्षेत्र में यह आधुनिक युग की देन है। बच्चे जीवन की सबसे अनमोल निधि होते है। उनका स्वभाव सरल, सहज एवं उत्साह से भरा होता है लेकिन यह उत्साह से भरी जिंदगी चंद बच्चों को ही मिलती है। आज भी अधिकतर बच्चे बाल-मजदूरी के शिकार हो रहे हैं इसलिए समकालीन हिंदी कविता में बाल-मनोविज्ञान एक प्रमुख समस्या बनकर उभरा है। यह युग ही उनके लिए संक्रमण का युग रहा। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल के चलते देश बदल रहा था। ऐसे में साहित्य की परिधि में न आने वाले विषयों पर भी प्रभाव पड़ने लगा। इन बदलावों ने बाल-मनोविज्ञान को भी नई दिशा दी। विशेषकर समकालीन हिंदी कविता के कवि नरेश सक्सेना की कविताओं ने वह स्थान लिया और बच्चों के लिए लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया। उनकी कविताओं में बाल-मनोविज्ञान की ऐसी छवि दिखाई पड़ती है जिसने बाल-मजदूरी से ग्रसित जीवन को उनके हक की आवाज दी।

**सूचक शब्द:- :-** बाल मनोविज्ञान, पूँजीपति वर्ग, देश, मजदूरी, समाज

## मूल लेख

नरेश सक्सेना समकालीन हिंदी कविता के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने बाल-मनोविज्ञान कोअपने साहित्य का केंद्र बनाया। उन्हें बच्चे बहुत पसंद आते हैं इसलिए बड़ी सहजता एवं सरलता के साथ वे उनको कविता के केंद्र में लाने की कोशिश करते हैं। उनकी कविताओं से यह ज्ञात होता हैं कि वे बहुत ही संवेदनशील एवं जन-कल्याण की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं इसलिए उनकी रचनाओं में देश और समाज के साथ बच्चों की

चिंता भी दिखाई पड़ती हैं। छोटे-छोटे बालक कमाने के लिए घर से बाहर जाते हैं, उन्हें अपना और परिवार का पेट पालने के लिए बचपन से ही नौकरी करनी पड़ती है। इन सबका जिम्मेदार कवि पूंजीपति वर्ग को मानते हैं। वे केवल अपने बच्चों की सुविधा देखते हैं उसके लिए वे किसी के भी बच्चों को काम में लगा देते हैं। वे एक ऐसे बच्चे को तलाशते हैं जो न कभी स्कूल गया हो और न ही कभी गुब्बारे-गेंद ही मांगता हो बल्कि वह सिर्फ अपने काम से काम रखता हो। कवि इन्हीं समस्याओं पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं-"कुछ बच्चे बहुत अच्छे होते हैं/वे गेंद और गुब्बारे नहीं मांगते/ मिठाई नहीं मांगते जिद्द नहीं करते/और मचलते तो हैं ही नहीं..../इतने अच्छे बच्चों की तलाश में रहते हैं हम/और मिलते ही/ उन्हें ले आते हैं/अक्सर/ तीस रुपए महीने और खाने पर।" (सक्सेना, 2014, पृ. 97-98) हमारे समाज में बहुत से ऐसे बच्चे हैं, जो बाल मजदूरी करने के लिए विवश होते हैं। वे कभी अपने माता-पिता के साथ पूरे दिन ईंट के भट्टों पर गर्म लू में तपते हुए, तो कभी खेतों में जाड़े की ठंड में ठिठुरते हुए नजर आते हैं। यहाँ तक कि एक नवजात बच्चा जिसने अभी ठीक से चलना भी नहीं सीखा वह भी अपनी माँ के पीठ पर चिपके हुए उसकी मजदूरी में शामिल होकर संघर्ष करता है। आर्थिक विपन्नता के कारण ऐसे बच्चे शिक्षा के अभाव में जैसे-जैसे बड़े तो होते जाते हैं पर उनकी स्वाभाविक खिलखिलाहट गायब होती चली जाती है। इस विषय पर गांधीजी का नारा 'बच्चों की मुस्कान देश की शान।' भी निरर्थक साबित हो जाता है। इस संदर्भ में अँग्रेजी के एक विद्वान का कथन इस बात की ओर अधिक ज़ोर देता है कि कोई भी देश कितना विकसित एवं खुशहाल है? उनका कथन है, "किसी देश की समृद्धि और उसकी सभ्यता के विषय में जानने की जिज्ञासा हो तो उस देश के बच्चों को देख लीजिए। आपको तुरंत ही ज्ञात हो जाएगा कि वह देश कितना खुशहाल है।" (हिन्दी समय, 2021)

नरेश सक्सेना ने बाल विमर्श से संबद्ध विषयों को कविता के केंद्र में लाने का प्रयास किया। उनकी कविताओं में नयापन है। बहुत ही कम शब्दों में गंभीर बात कहने वाली उनकी कविता पाठकों को नई दृष्टि प्रदान करती हैं। उनकी कविता के संबंध में डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं- "नरेश सक्सेना की कविताएँ ऐसी कविताएँ हैं जिनका रूप सहज है लेकिन जिनकी अंतर्वस्तु बहुत जटिल है।" (त्रिपाठी, 2014, पृ. 34) नरेश सक्सेना भली-भांति समझते हैं कि देश की यह स्थिति आखिर क्यों हो रही है। वे सीधा-सीधा व्यवस्था या पूंजीपति वर्ग का विरोध नहीं करते लेकिन सांकेतिक रूप में उनके यहाँ सारी चीजें आ जाती हैं। इसी व्यवस्था का विरोध करते हुए वे लिखते हैं- "दीमकों को/ पढ़ना नहीं आता/वे चाट जाती हैं/पूरी किताब।" (सक्सेना, 2014, पृ. 79) यह दीमक हर उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो शोषण एवं अत्याचार का साथ देता है। नरेश सक्सेना की कविताएँ कई बार शब्दों या अर्थों के बजाय एक दृश्य के रूप में हमारी स्मृति में अपनी जगह बना लेती है। इसका कारण कहीं न कहीं उनका फिल्म जगत के साथ सरोकार भी रहा है। उनका प्रयास रहा है कि बाल-मजदूरी की समस्या समाप्त हो जाए। समकालीन हिंदी कविता की इन्हीं प्रवृत्तियों पर ज़ोर देती है। इस संदर्भ पर अपना मत रखते हुए डॉ. शकुंतला कालरा लिखती हैं- "समकालीन कविता मूलतः 1980 के पश्चात की वह कविता है जो बालमन की गहराइयों से उभरने लगी और उसमें नई-नई दिशाएँ प्रकट होने लगीं। उसमें बालकों के सपने हैं। कल्पना जगत की उड़ान है। बाल क्रीड़ाएँ, उनकी चेष्टाएँ हैं, हास्य एवं विनोद है। साथ ही प्रकृति है, पर्यावरण है। बच्चों के प्रिय परंपरागत विषय हैं, तो दूसरी ओर कम्प्यूटर, रोबोट, मोबाइल भी कविता

के अंग बने हैं। विषय के साथ भाव, विचार, शिल्प एवं प्रस्तुति से जुड़े नए प्रयोग भी हैं, जिसने इस विधा को समुन्नत करने और उसे गति प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।" (कालरा, 2014, पृ. 71) बचपन सभी बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार होता है और अपने माता-पिता के प्रेम एवं देख-रेख में सभी को मिलना चाहिए लेकिन कुछ बच्चों को यह नसीब नहीं होता। बच्चे इतने निश्चल एवं सहज होते हैं कि वे किसी के भी बहकावे में आ जाते हैं और जिन बच्चों की जिंदगी अभी-अभी शुरू हुई होती हैं, वे शुरू से ही घर-परिवारों के कामों में जुट जाते हैं। ये गैर कानूनी कृत्य बच्चों को एक मजदूर आदमी की तरह जीवन जीने पर मजबूर कर देता है जिसके कारण बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास ठीक से नहीं हो पाता है और उनका भविष्य अंधकारमय बन जाता है।

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है जहां हर तरह के लोग रहते हैं। ऐसे में आर्थिक रूप से गरीब बच्चों की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। देश की सबसे भयावह स्थिति यह है कि इतने कानून बनने के बाद भी बाल-श्रमिक व उनका शोषण अब भी जारी है। एक ओर सरकार उन्हें शिक्षा का अधिकार दे रही है वहीं दूसरी ओर गरीबी के कारण उनके माँ-बाप उन्हें शिक्षित नहीं करा पा रहे हैं, ऐसे में गरीब बच्चों के हाथों से जीवन का सबसे अमूल्य क्षण उनसे दूर होता जाता है। छोटी-सी उम्र में ही सुबह उठकर काम पर जाना, कलम और कॉपी की जगह कुदाल और फावड़ा लेकर जाना, खेलने-कूदने के समय में दूसरों के घर पर साफ-सफाई करना। उनकी इस स्थिति को देखकर कवि का मन विचलित हो उठता है, उनके अंदर एक छटपटाहट पैदा होती है। लेकिन अब बच्चे थोड़े जागरूक हो गए हैं, अब वे प्रश्न कर रहे हैं। इस पर कवि नरेश सक्सेना लिखते हैं- "आज किले में भर गए हैं बच्चे/उन्होंने तुम्हारी बुर्जियों, मेहराबों, खंभों और/कंगूरों पर लिख दिये हैं अपने नाम/कक्षाएँ और स्कूल के पते/अब वे पूछ रहे हैं सवाल/कि सुल्तान के घर का इतना बड़ा दरवाजा/ उसकी इतनी ऊँची दीवारें/उनके चारों तरफ इतनी सारी खाइयाँ..../ आख़िर.../ सुल्तान इतना डरपोक क्यों था!"(सक्सेना, 2014, पृ. 30) नरेश सक्सेना की कविताओं की भाषा-शैली बोलचाल की संवेदना के रूप में प्रस्तुत होती है। जिस तरह गीतों में लय, संगीत, सुर, ताल, भाषा, शब्द एक साथ तादम्यता से प्रस्तुत होते हैं ठीक उसी तरह उनकी कविताएँ भी गुनगुनाती हुई आती हैं। उनका मानना है कि संवेदना, प्रेम, करुणा, दया एवं आत्मीयता के लिए भाषा की आवश्यकता नहीं बल्कि भावों की जरूरत होती है। अपनी कविताओं में भी वे भाषा से ज्यादा भावों पर ध्यान देते हैं वे लिखते हैं-"शिशु लोरी के शब्द नहीं/ संगीत समझता है/बाद में सीखेगा भाषा/ अभी वह अर्थ समझता है।/समझता है सबकी भाषा/ सभी के अल्ले ले ले ले,/तुम्हारे वेद पुराण कुरान/ अभी वह व्यर्थ समझता है।/अभी वह अर्थ समझता है।/समझने में उसको, तुम हो कितने असमर्थ/बाद में सीखेगा भाषा/ अभी वह अर्थ समझता है॥" (सक्सेना, 2014, पृ. 45)

आज एक समस्या यह भी है कि कुछ बच्चे स्कूल जाने से मना करते हैं, उन्हें पढ़ाई से चिढ़ आ गयी है। स्कूल के बाद फिर होम ट्यूशन जाना, फिर आकर स्कूल का होमवोर्क करना आदि समस्या है तो दूसरी ओर कुछ बच्चे ऐसे हैं कि अगर काम पर नहीं गए तो रात को खाली पेट सोना पड़ता है। इन सब समस्याओं को समकालीन हिंदी रचनाकारों ने दिखाने का प्रयास किया है। उन्होंने बालमन के दुःख को अपने रचना का विषय बनाया और यह प्रयास किया कि सरकार उनकी इच्छाओं एवं अधिकारों को उन्हें वास्तविक रूप में दे ।

इसलिए साहित्य में पहले भी गद्य एवं पद्य दोनों में बाल-मनोविज्ञान एवं बाल समस्याओं से जुड़ी बहुत सारी रचनाएँ रची गई यथा- सूरदास कृत 'बाल वर्णन', प्रेमचंद कृत 'ईदगाह'(कहानी), श्रीधर पाठक कृत 'बाल विधवा'(काव्य), आदि लेकिन समकालीन हिंदी कविता ने बाल-मनोविज्ञान पर जिस तरह से विचार किया है उससे पहले की कविताओं में वह स्वर उभरकर नहीं आ पाया।

निष्कर्षतः इतना कहा जा सकता है कि बच्चे देश और समाज का भविष्य हैं अगर उनके बारे में नहीं सोचा गया तो देश अंधकार के गर्त में पड़ा रहेगा। समाज में उन्हें भी समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। उनके वर्तमान और भविष्य के बारे में सोचना समाज और सरकार का कर्त्तव्य है। यह तभी संभव होगा जब हम बच्चों की समस्याओं से एकाकार होंगे और मिलकर उसके निवारण के मार्ग तलाशेंगे। समकालीन हिंदी कवियों ने इन विषयों पर गौर किया और इसे साहित्य के केंद्र में लाने का प्रयास किया ताकि बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो।

वस्तुतः नरेश सक्सेना ने एक ज्वलंत समस्या को कविता का स्वरूप देकर उसे तार्किक आधार प्रदान किया और बाल-मनोविज्ञान ने अपने अनुसार कविताओं को ढालकर दूसरों के लिए भी सुलभ करवाया और बाल-मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं की विकसित अनिवार्यता पर बल दिया।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

सक्सेना, नरेश. (2014). कवि ने कहा. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन.

https://www.bhaskar.com/news/JHA-MAT-latest-chakradharpur-news-021002-992222-NOR.html

https://tinyurl.com/5aujjhw7

त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2014). नरेश सक्सेना का काव्य वैशिष्ट्य. (संपा. अनीता श्रीवास्तव). लखनऊ: रेवान्त पत्रिका.

कालरा, शकुंतला. (2014). विचार और चिंतन : हिंदी बाल साहित्य. नई दिल्ली: हिन्दी बुक सेंटर.